प्रश्न - हाल के वर्षों में लैटिन अमेरिकी देशों के साथ चीन के सम्बंधों में काफी वृद्धि देखी गई है, जबकि भारत इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत कमजोर स्थिति में बना हुआ है। भारत को लैटिन अमेरिकी देशों के साथ सम्बंधों को अपने पक्ष में करने के लिये क्या प्रयास करने की आवश्यकता है? चर्चा करें।

(200 शब्द)

मॉडल उत्तर

दृष्टिकोण:

- भूमिका में लैटिन अमेरिकी देशों की चर्चा करते हुए बतायें कि इन देशों के साथ चीन के संबंधों में वृद्धि, जबकि भारत इस क्षेत्र में कमजोर स्थिति में बना हुआ है। कैसे?
- भारत को लैटिन अमेरिकी देशों के साथ सम्बंधों को अपने पक्ष में करने के लिये क्या प्रयास करने की आवश्यकता है?
- अंत में संतुलित निष्कर्ष दें।

लैटिन अमेरिकी देशों की आजादी 1960 में मिला। इससे पहले इन देशों का अधिकांश क्षेत्र अमेरिका के प्रभुत्व में था। लैटिन अमेरिकी देशों में पिछले वर्षों से भुगतान संतुलन की समस्या दिखाई दे रही है और अमेरिका इस क्षेत्र में कोई मदद नहीं कर रहा है, अत: चीन द्वारा इस क्षेत्र में सस्ते दर पर ऋण उपलब्ध कराकर वहां की समस्या को समाधान करने की कोशिश कर रहा है।

जबकि भारत को इस क्षेत्र में कमजोर स्थिति बने रहने का मुख्य भारत का PTA सफल नहीं हो पाना है, दूसरी ओर चीन की अपेक्षा भारत ने कम मात्रा में ऋण सुविधा उपलब्ध कराई है।

अत: भारत को लैटिन अमेरिकी देशों के साथ संबंधों को अपने पक्ष में करने के लिए निम्नलिखित प्रयास करने की आवश्यकता हैं:-

- भारत में जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्य संकट की स्थिति भविष्य में आ सकती है, ऐसी स्थिति में उन देशों के साथ भारत को संबंध बनाना चाहिए जो कृषि क्षेत्र में आधुनिक तकनीक दे सकते हैं। जिससे इन देशों के अर्थव्यवस्था में वृद्धि हो सकती है। जैसे:- ब्राजील, वेनेजुएला।
- लैटिन अमेरिकी देशों में ऊर्जा का भण्डार है। अत: भारत संपर्क बनाकर ऊर्जा समस्या का समाधान कर सकता है।
- भारत वर्तमान में गैर-परम्परागत ऊर्जा स्रोतों की तलाश कर रहा है, जिसमें लैटिन अमेरिकी देश भारत को मदद कर सकते हैं।
- लैटिन अमेरिका वर्तमान में अपनी सुरक्षा को लेकर चिंतित है अत: भारत इन देशों में Non-Lethal हथियार दे सकता है।
- भारत विज्ञान तकनीक तथा सेवा क्षेत्र का इन देशों में प्रसार कर सस्ती सेवाएं उपलब्ध करा सकता है।